''मानवीय एकता के परिप्रेक्ष्य में ''धर्म''

गणेश सिंह

''धर्म मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करने वाली वह व्यापक अभिवृत्ति जो सर्वाधिक मूल्यवान, पवित्र, सर्वत्र तथा शक्तिशाली समझे जाने वाले आदर्श और अलौलिक उपास्य विषय के प्रति अखण्ड आस्था एवं पूर्ण प्रतिबद्धता के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं और मनुष्य के दैनिक आचरण तथा प्रार्थना, पूजा, पाठ, जवन्तय आदि वाह्य कर्मकाण्ड में अभिव्यक्ति होती है।''

धर्म ही सत्पुरूषों का हित है, सत्य ही धर्म पुरूष की आश्रय है और चराचर तीनों लोक धर्म से ही चलते हैं। व्यक्तियों में एकता लाना है तो हमें सर्वप्रथम धर्म के प्रति कट्टरता को त्याग करना होगा। राम, रहीम, को सम्प्रदाय पूर्वक न देखकर सौहार्दपूर्वक देखना होगा। भारत के परिप्रेक्ष्य में धर्म का अर्थ विविधता में एकता के पालन में निहित है।